विशद

श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान

मण्डल

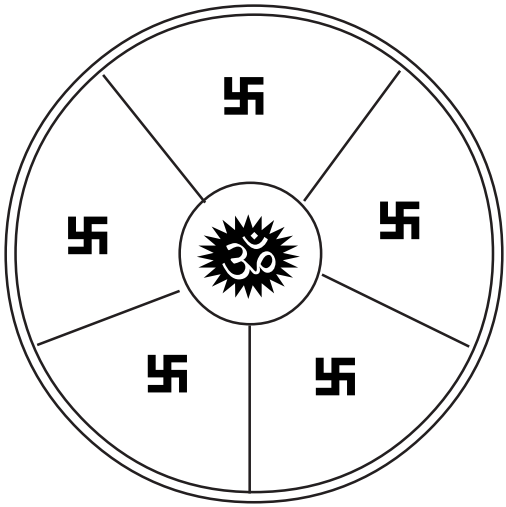

रचनाकार

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज

प्रकाशक

विशद साहित्य केन्द्र

कृति : **विशद श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान**
कृतिकार : **प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज**
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज
सहयोगी : क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागर जी महाराज
क्षुल्लिका भक्ति भारती माताजी, वात्सल्य भारती माताजी
संपादन : ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), ब्र. आस्था दीदी (9660996425), ब्र. सपना दीदी (9829127533)
संयोजन : ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी
संस्करण : प्रथम 2016 (1000 प्रतियाँ)
मूल्य : 21/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र : (1) **निर्मल कुमार गोधा**
2142 निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर
मो. 0141-2319907, 9414812008
(2) **विशद साहित्य केन्द्र**
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कुआँ वाल जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा), मो. 9812502062
(3) **हरीश जैन**
जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरु पाली
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली
मो. 098181157971, 09136248971
(4) **सुरेश जैन**
पी-958, गली नं. 3, शान्ति नगर, दुर्गापुरा, जयपुर
मो. 9413336017

पुण्यार्जक : **धर्मचन्द-सुशीला देवी जैन (काला)**
मु. प्रेमपुरा वाया कुकुन वाली, तहसील - नावा,
जिला-नागौर (राज.) मो. 9530409595, 9982835835

e-mail : vishadsagar11@gmail.com
प्रकाशक : **विशद साहित्य केन्द्र**
मुद्रक : **पिक्सल 2 प्रिंट, जयपुर,** हेमन्त जैन (बड़ागाँव) मो. 9509529502

श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान

समुच्चय पूजन

स्थापना

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष शुभ, पञ्च कल्याणक के धारी।
पार्श्वनाथ भगवान हुए हैं, मंगलमय मंगलकारी।।
सोलह स्वप्न देखती माता, होती मन में भाव विभोर।
स्वप्नों का फल पिता बताते, रत्न वृष्टि हो चारों ओर।।
मेरू गिरि पे न्हवन कराते, स्वर्ग से आके देव प्रधान।
पाते है वैराग्य प्रभू तव, देव मनाएँ तप कल्याण।।
कर्म घातिया के नाशी प्रभु, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
मोक्ष कल्याणक पाने वाले, जिनका हम करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री गर्भजन्मतपज्ञानमोक्षकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री गर्भजन्मतपज्ञानमोक्ष-कल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री गर्भजन्मतपज्ञानमोक्षकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज - माता तू दया करके)

हम प्रासुक करके जल, भक्ती से यह लाए।
श्रद्धा जागे उर में, प्रभु चरण शरण आए।।
हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन से अति शीतल, जिन पद रज सुखदायी।
न श्रद्धा हृदय जगी, यह भूल हुई भाई।।

हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर वैभव पा, भव वन में भटकाए।
जग-जन से राग किया, विषयों में उलझाए।।
हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कई पुष्प सरोवर में, खुशबू महकाते है।
रस में फँसकर मधुकर, निज प्राण गँवाते है।।
हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग द्वारा, भव-वन में भटकाए।
जग-जन से राग किया, विषयों में उलझाए।।
हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह महातम में, सदियों से भटकाए।
ना अन्तर में श्रद्धा, हे नाथ! जगा पाए।।
हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बन्धन से, हम जग में उलझाए।
औरों को समझाया, पर खुद ना समझ पाए।।
हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का फल पाके, सुख दुख हमने पाया।
प्रभु मोक्ष महाफल की, ना मिल पाई छाया।।
हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पर को हमने देखा, निज से अन्जाने हैं।
अब पद अनर्घ्य पाने, के हम दीवाने हैं।।
हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम तुमको ध्याते हैं।
यह पञ्चकल्याणक की, शुभ पूजा गाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।**
जयमाला गाते 'विशद', पाने भवदधि पार।।

(तर्ज- गुरुवर हम आये हैं हमें...)

हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम चरण शरण आये।
इस जग के दुःखों से, अब तो हम घबड़ाये।। टेक।।
सुख की अभिलाषा में, संसार बढ़ाया है।
अपना स्वरूप हमने, प्रभु जान ना पाया है।।

सद् ज्ञान जगाने को, हे नाथ तुम्हे ध्याये।
इस जग...।।1।।
हमने मिथ्यामति से, इस जग को अपना माना।
तुम जगत हितैषी हो, ना तुमको पहिचाना।।
भव-भव में हे भगवन्, कर्मों से दुख पाए।
इस जग...।।2।।
चौरासी के चक्कर में, जग-भ्रमण किया भारी।
प्रभु दर्शन करके भी, हो सके ना अविकारी।।
हे नाथ! कई प्राणी, तुमने शिव पहुँचाए।
इस जग...।।3।।
बस एक ही इच्छा है, रत्नत्रय निधि पाएँ।
भव सागर में प्रभु जी, अब और ना भटकाएँ।।
तुम सा बनने प्रभु जी, हम महिमा शुभ गाए।
इस जग...।।4।।
हे नाथ! हृदय मेरे, सद् ज्ञान की ज्योति जगे।
अब विशद भक्ति में ही, मेरा उपयोग लगे।।
हे प्रभू भक्ति से हम, तुम चरणों सिर नाए।
इस जग...।।5।।

दोहा- **पार्श्वनाथ भगवान हैं, पूज्य त्रिलोकीनाथ।**
जिनके चरणों में, 'विशद' झुका रहे हम माथ।।

ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष कल्याणक विभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शिव पथ के राही बने, पार्श्वनाथ भगवान।**
रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाए पञ्च कल्याण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ गर्भ कल्याणक पूजन-1

स्थापना

पार्श्वनाथ भगवान का, दिव्य गर्भ कल्याण।
नगर बनारस में विशद, गूंजा मंगल गान।।
गर्भ पूर्व छह माह से, बरसे रत्न अपार।
देव दिव्य नगरी रचे, अतिशय मंगलकार।।
माँ वामा ने स्वप्न शुभ, देखे भाव विभोर।
पति से फल सुनकर हुआ, आनन्द चारों ओर।।
द्वितिया कृष्ण वैशाख की, पाए गर्भ महान।
शिव पद धारी पार्श्व जिन, का करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल नन्दीश्वर पूजा)

भर लाये प्रासुक नीर, चरणों धार करें।
पा जाएँ भव का तीर, तीनों रोग हरें।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाएँ गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन की परम सुवास, चारों दिश महके।
हो भव आताप विनाश, मन मेरा चहके।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाए गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।2।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल महान, धोकर के लाए।
पद अक्षय मिले प्रधान, अर्चा को आए।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाए गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।3।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुञ्ज लिए शुभकार, पावन गंध भरे।
हो काम रोग निरवार, मन आह्लाद करे।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाए गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।4।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवैद्य लिए रसदार, पूजा को लाए।
हो क्षुधा रोग परिहार, जिन महिमा गाए।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाए गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।5।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जला रहे शुभ दीप, मोह तिमिर नाशी।
अर्पित कर चरण समीप, होवें शिव वासी।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाए गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।6।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप जलाए नाथ, आठों कर्म नशें।
हम चरण झुकाए माथ, वसु गुण हृदय बसें।।

हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाए गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।7।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे ले रसदार, पूज रहे स्वामी।
हम पाएँ मुक्ती द्वार, होके शिवगामी।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाए गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।8।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, चढ़ाकर हर्षाएँ।
हम पाके सुपद अनर्घ्य, मोक्ष पदवी पाएँ।।
हे पार्श्वनाथ भगवान, तुम हो शिवगामी।
हम पाए गर्भ कल्याण, चरणों प्रणमामी।।9।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

सपने सोलह देख माँ, हर्षित हुई अपार।
प्रभू गर्भ में आयेंगे, हुई 'विशद' जयकार।।

चौपाई

स्वप्न प्रथम ऐरावत आए, मात पुण्यशाली सुत पाए।
वृषभ स्वप्न दूजा शुभकारी, होगा पुत्र धर्म का धारी।।
तृतिय स्वप्न सिंह शुभ पाए, बलधारी सुत गर्भ में आए।
माल युगल सपने में आए, धर्मतीर्थ को बाल चलाए।।

पञ्चम स्वप्न लक्ष्मी जानो, श्री पति सुत होगा यह मानो।
चाँद स्वप्न छठवा शुभकारी, सुत होगा बहु आनन्दकारी।।
सूर्य सातवाँ स्वप्न दिखाए, कांतिमान माँ सुत उपजाए।
अष्टम कलश युगल है नामी, सुत होगा निधियों का स्वामी।।
मीन युगल नौवाँ है भाई, बालक होगा अति सुखदायी।
दशम सरोवर सपना आए, शुभकर लक्षण बालक पाए।।
स्वप्न समुद्र एकादश नामी, बालक होगा केवलज्ञानी।
बारहवाँ सिंहासन जानो, जगत गुरू सुत होगा मानो।।
देव विमान स्वप्न में पाए, स्वर्ग से चयकर बालक आए।
गृह नागेन्द्र स्वप्न में आवे, अवधि ज्ञानी सुत उपजावे।।
रत्न राशि सपना शुभकारी, सुत पाए माँ सद् गुणधारी।
स्वप्न अग्नि निर्धूम दिखाए, सुत कर्मेन्धन पूर्ण जलाए।।
हो प्रवेश वृष उर में भाई, तीर्थंकर सुत हो शिवदायी।
स्वप्नों का फल पिता बतावे, सुनकर माँ अति हर्ष बढ़ावे।।
गर्भ कल्याणक देव मनावें, गर्भ शोध को सुरियाँ आवें।
अन्तिम गर्भ प्रभू यह पावें, 'विशद' मोक्षपुर प्रभु जी जावें।।

दोहा- **पूजा गर्भ कल्याणक की, जग में रही महान।**
विशद भाव से कर रहे, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पार्श्वनाथ भगवान का, किया यहाँ गुणगान।**
अन्तिम है यह भावना, रहे प्रभू का ध्यान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाजंलि क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पूजन-2

स्थापना

जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, रहा जगत सुखकारी।
देव दुन्दुभि बजी गगन में, भविजन की मनहारी।।
इन्द्र सुरासुर जा सुमेरु पे, शुभ अभिषेक कराए।
एक सहस्र आठ कलशों की, धारा दे हर्षाए।।

दोहा

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पार्श्व जिनेश।
आह्वानन जिन का हृदय, करते यहाँ विशेष।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणप्राप्त श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वननम्। ॐ ह्रीं जन्मकल्याणप्राप्त श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्थापनम्। ॐ ह्रीं जन्मकल्याणप्राप्त श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नीरेन्द्र छन्द)

होती जय-जयकार जगत में, जिनका सब गाते यशगान।
निर्मल नीर से अर्चा करके, सम्यक् श्रद्धा जगे महान।।
जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम ज्योति उद्योतित होती, मोह तिमिर हरने वाले।
चन्दन से पूजा करते हैं, भक्त चरण के मतवाले।।
जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर-नर विद्याधर आकर के, करते हैं सम्यक् अर्चन।
अक्षत से पूजा करते हैं, जिनपद में करके वन्दन।।
जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।3।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

भव सागर से तारण हारे, मोक्ष महल ले जाते हैं।
पुण्य मालिका से पूजा कर, शिव समृद्धी पाते हैं।।
जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।4।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व के ज्ञेय आपके, ज्ञान में सर्व झलकाए हैं।
शुभ नैवेद्य बनाकर पूजा, करने को तव आये हैं।।
जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।5।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह भाव की अग्नि जलकर, भू मण्डल को त्रस्त करे।
विशद ज्ञान का दीप जले तो, मोह अन्ध को अस्त करे।।
जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।6।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान अग्नि से नश जाती है, भव की सारी पीड़ाएँ।
अष्ट कर्म यह करा रहे हैं, जग में अगणित क्रीड़ाएँ।।

जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।7।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र की अर्चा करके, विपुल सौख्य प्राणी पाते।
फल से अर्चा करने वाले, मोक्ष महा पद पा जाते।।
जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।8।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ की अभिलाषा से, कर्मादिक पर वार किया।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, स्वयं आप उपकार किया।।
जन्म कल्याणक पार्श्व प्रभू का, मिलकर भक्त मनाते आन।
शिव पथ के राही बन जाएँ, 'विशद' भावना जगे महान।।9।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **जन्मोत्सव पाए प्रभू, पार्श्वनाथ भगवान।**
आज यहाँ करते 'विशद', जिनका हम जयगान।।

(शम्भू छन्द)

मतिश्रुत अवधि ज्ञान शुभकारी, जन्म से पाते तीनों ज्ञान।
जन्म समय साता सागर में, डूबे तीनों लोक महान।।
इन्द्र का इन्द्रासन कम्पित हो, इन्द्र होय पुलकित बलवान।
अवधिज्ञान से इन्द्र जानता, जन्में तीर्थंकर भगवान।।
ऐरावत पर इन्द्र बैठकर, सप्त सैन्य दल ले आया।
विनय सहित सब इन्द्रों को भी, हर्ष पूर्वक बुलवाया।।

काशी नगरी की प्रदक्षिणा, आकर के दी मिलकर तीन।
इन्द्राणी भेजी प्रसूति गृह, हुई स्वयं जो पुण्याधीन।।
नमस्कार करके माता को, किया शीघ्र ही मायालीन।
दर्श किया बालक का उसने, भक्ती में होकर के लीन।।
गोदी में लेकर के सौंपा, इन्द्राणी ने इन्द्र के हाथ।
सहस नयन से दर्शन करके, शीघ्र झुकाया जिनपद माथ।।
इन्द्र प्रभू को ऐरावत पर, लेकर पाण्डुक वन की ओर।
ले जाकर के न्हवन् कराये, प्रभु का होके भाव विभोर।।
एक हजार आठ कलशों से, सज्जित हो सौधर्मैशान।
जिन प्रभु का अभिषेक करावें, गूँजे चारों दिश जयगान।।
इन्द्राणी ने वस्त्राभूषण, पहिनाकर शृंगार किया।
नजर ना लागे मेरे प्रभू को, एक दिठाना लगा दिया।।
एक भवातारी होने का, सचि भी पुण्य सुफल पावे।
स्त्रीलिंग का छेदन कर जो, अगले भव शिवपुर जावे।।
इन्द्र ने काशी नगरी आके, मात पिता को नमन किया।
आनन्द रहस्य रचाया अनुपम जग-जन का मन मोह लिया।
बोला विनय सहित माता से, ये हैं त्रिभुवन के स्वामी।
पुण्य सुफल पाओ भक्ती कर, ये हैं मुक्ती पथगामी।।
दायें पग में नाग चिह्न लख, पार्श्वनाथ शुभ नाम दिया।
अमृत स्थापित अंगुष्ठ में, सुरपति ने तव स्वयं किया।।
वस्त्राभूषण भोजन आदिक, स्वर्ग से भेजे मंगलकार।
होने लगी धरा पर अतिशय, पार्श्व प्रभू की जय जयकार।।

दोहा- **पावन श्री जिनवर कहे, पावन जन्म कल्याण।**
पावन करते हम विशद, श्री जिनका गुणगान।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पूजा जन्म कल्याणक की, करते हैं जो जीव।**
मोक्ष प्रदायक श्रेष्ठतम, पाके पुण्य अतीव।।

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ तप कल्याणक पूजन -3

स्थापना

पार्श्व प्रभू का तप कल्याणक, महिमामय महिमाकारी।
मगसिर सुदी दशें को स्वामी, संयम पाए अविकारी।।
पञ्च मुष्ठि से केशलुंच कर, हुए महाव्रत के धारी।
निज आतम का ध्यान किए जो, मंगलमय मंगलकारी।।

दोहा- **पार्श्वनाथ भगवान शुभ, पाए तप कल्याण।**
निज उर में जिन का विशद, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वननम्। ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्थापनम्। ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(तर्ज- नर तन रतन अमोल)

प्रासुक शुद्ध सुवासित जल हम, भर लाए झारी।
जनम जरादिक रोग मिटे प्रभु, तव पद बलिहारी।।
तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन सरस कपूर मिलाकर, जल में घिसवाए।
भव संताप मिटाने को हम, चरण शरण आए।।
तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण थाल में अक्षय अक्षत, भरके हम लाए।
कर्म श्रृंखला नश जाए पद, अक्षय मिल जाए।।
तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

विविध भांति के पुष्प अनेकों, थाल में भर लाए।
काम रोग के शमन हेतु हम, अर्चा को आए।।
तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा सताती हरदम हमको, प्रभु तुम नाश किए।
षट् रस व्यंजन शुद्ध बनाकर, आए यहाँ लिए।।
तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम में भटकाए, शिव पथ ना पाए।
घृत के दीप जलाकर चरणों, शिव पाने आए।।
तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशविध धूप मनोहर लेकर, खेने यह लाए।
कर्म नाश हों धूप संग ही, प्रभु महिमा गाए।।

तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदिक फल यह ताजे, अर्चा को लाए।
मुक्ती पद की है अभिलाषा, चरणों सिर नाए।।
तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमाकर, चरुवर दीप लिए।
धूप जला अग्नी में, ताजे फल का अर्घ्य किए।।
तप कल्याणक की पूजा कर, मन में हर्षाएँ।
सम्यक् तप को धारण करके, शिव पदवी पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

पूजा तप कल्याण की, करते तप के हेतु।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव का सेतु।।

(पद्धरि छन्द)

जय-जय तीर्थंकर पार्श्वनाथ, तुम चरण झुकाएँ भक्त माथ।
तुम हो प्रभु जी गुण के निधान, तुमने प्रगटाया ज्ञान ध्यान।।
जब अष्ट वर्ष के हुए आप, धारे व्रत तुमने तजे पाप।
गज पर होके प्रभु जी सवार, गये सैर करन को एक बार।।

वन में तपसी तप तपे घोर, चहुँ दिश अग्नी का रहा जोर।
तपसी से तब बोले कुमार, तप तपना तेरा है असार।।
क्यों जला रहे हो यहाँ आग, इसमें जलते हैं युगल नाग।
तपसी ने तब लेकर कुदाल, लकड़ी फाड़ी हो गया निहाल।।
फिर पास में जाकर के कुमार, शुभ मंत्र सुनाये णमोकार।
वह नाग युगल बन गये देव, धरणेन्द्र पद्मावति बने एव।।
यह दृश्य देख प्रभु जी विराग, धारे मन का सब छोड़ राग।
जाना प्रभु ने यह जग असार, है नहीं जगत् में कोई सार।।
अनुप्रेक्षा चिन्तन कर कुमार, मन में धारे अनुपम विचार।
तत्क्षण लौकान्तिक आए देव, वह धन्य-धन्य कह उठे एव।।
तव देव पालकी लिए आन, जो किए भाव से गुणोगान।
लेकर प्रभु को तब चले देव, अश्वत्थ सुवन पहुँचे सुएव।।
परिग्रह तज के सारा जिनेश, प्रभु जी संयम धारे विशेष।
मनःपर्यय पाए प्रभू ज्ञान, निज आतम का प्रभु किए ध्यान।।
फिर गुल्मखेट नगरी जिनेश, नृप ब्रह्मदत्त के गृह विशेष।
शुभ क्षीर का प्रभु पाए आहार, पञ्चाश्चर्य सुर कीन्हे अपार।।

दोहा

आस्रव का प्रभु रोधकर, संवर किए महान।
कर्म निर्जरा हेतु जिन, किए आत्म का ध्यान।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पूजा तप कल्याण की, करते हैं जो लोग।
मुक्ति वधू का शीघ्र ही, पाते वे संयोग।।

इत्याशीर्वादः। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ ज्ञानकल्याणक पूजन-4

स्थापना

उत्तम संयम को पाकर के, किए आत्मा का जो ध्यान।
श्रेण्यारोहण करके स्वामी, प्रगटाए शुभ केवलज्ञान।।
इन्द्राज्ञा से धन कुबेर ने, समवशरण शुभ रचा महान।
भवि जीवों ने पार्श्व प्रभू का, विशद किया अनुपम गुणगान।।

दोहा- **चैत कृष्ण की चतुर्थी, हुआ ज्ञान कल्याण।**
पार्श्वनाथ भगवान शुभ, पाए केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्थापनम्। ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरीगीता छन्द)

हे नाथ हम मिथ्यात्व ग्रह को, ना कभी भी जय किए।
यूँ काल अब तक बहुत बीता, रोग त्रय ना क्षय किए।।
हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव क्रूर ज्वर दे रहा पीड़ा, रोग क्षयकारी मुझे।
हे नाथ! अबतक भायी क्रीड़ा, विशद संसारी मुझे।।
हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

विषपान करके दुखमयी, हम मरण को अपना रहे।
अक्षय सुपद को तज सभी, सक्षय पदों को पा रहे।।
हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

निष्काम भावों से नहीं हम, जुड़ सके हैं हे प्रभो!
कंदर्प दर्प विकार मकर, ध्वजी में खोये विभो!।
हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

विषमयी भोजन बहुत खाया, निज स्वभावी छोड़कर।
निराहारी आत्मा से, रहे हम मुख मोड़कर।।
हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवैद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्याय दृष्टी जीव यह, संसार का नेता कहा।
है द्रव्य दृष्टी जीव जो, वह मोह का जेता रहा।।
हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अब कर्म पर्वत भेदने की, कला को पाना अहा।
शुभ लक्ष्य केवलज्ञान पाना, श्रेष्ठतम मेरा रहा।।

हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विषय सुख का स्वाद, मधुरिम जाने हैं अज्ञान से।
किन्तु मधू विषमय कुफल यह, नहीं जाना ज्ञान से।।
हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुमूल्य माना पञ्च इन्द्रिय, के विषय को हे प्रभो!
परमाणु भी मेरा नहीं फिर, मूल्य इनका क्या विभो!।
हम पार्श्व प्रभु की अर्चना, करने यहाँ पर आए हैं।
शुभ ज्ञान कल्याणक मनाने, द्रव्य आठों लाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **संयम को पाके प्रभू, किए आत्म का ध्यान।**
जयमाला गाते विशद, पाएँ केवलज्ञान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

हे पार्श्व प्रभो! करुणा निधान, ये भक्त शरण में आए हैं।
हो विशद ज्ञान के नाथ आप, हम तव चरणों सिर नाए हैं।।
महिपाल तपस्वी पंचाग्नी, तप करने वाला था नाना।
लक्कड़ में जलते युगल नाग, जिन पार्श्व प्रभु ने ये जाना।।
लकड़ी को फाड़ा तपसी ने, अधजले नाग उसमें पाए।
नवकार मंत्र तव दिए प्रभू, नागेन्द्र देव में उपजाए।।

वह नाग नागनी धरणीपति, पद्मावति यक्षी हुए अहा।
नाना मर ज्योतिष बना देव, शंवर जिसका शुभ नाम रहा।।
प्रभु अश्वबाग में ध्यान किए, तब कमठासुर संवर आया।
उपसर्ग किया क्रोधित होकर, पत्थर पानी तब वर्षाया।।
प्रभु स्वात्म ध्यान में लीन हुए, आसन कँपते ही सुर आये।
फणका आसन अरु क्षत्र बना, प्रभु को मस्तक पर बैठाए।।
प्रभु केवलज्ञान जगाए तव, सुर समवशरण शुभ बनवाए।
अहिच्छत्र नाम शुभ तीरथ पर, सब देव खुशी से हर्षाए।।
गणराज स्वयंभू आदिक दश, सोलह हजार मुनि साथ कहे।
श्रावक इक लाख श्राविकाएँ, त्रयलाख प्रभू के साथ रहे।।
शुभ सर्प चिह्न था वर्ण हरित, सौ वर्ष प्रभू आयू पाए।
प्रभु उग्र वंश नौ हाथ तुंग, उपसर्ग जयी शुभ कहलाए।।
चौतीसों अतिशय के स्वामी, प्रभु अनन्त-चतुष्टय प्रगटाए।
प्रातिहार्य अष्ट के धारी जिन, तुम चरणशरण में हम आए।।

दोहा

पार्श्व प्रभू के पद युगल, पूजें हो आनन्द।
अर्चा करते भाव से, पाने परमानन्द।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कर्म घातिया नाश कर, पाए केवलज्ञान।
'विशद' भावना है यही, पाए ज्ञान निधान।।

इत्याशीर्वादः। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ मोक्षकल्याणक पूजन-5

स्थापना

पार्श्व प्रभु जी योग रोधकर, प्रकटाए हैं पद निर्वाण।
कर्म अघाती भी वे नाशे, देव किए तव मंगलगान।।
प्रथम समय में प्रभू बहत्तर, अन्त में तेरह प्रकृतिनाश।
अविग्रह गति से सिद्ध शिलापर, जाके किए प्रभू जी वास।।
श्रावण सुदी सप्तमी पावन, हुई लोक में मंगलकार।
शत इन्द्रों ने बोला आके, पृथ्वी तल पर जय जयकार।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वननम्। ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्थापनम्। ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

धोकर मिथ्यामल को जिनने, निज शुद्ध चेतना को पाया।
शुभ वीतरागता की परिणति पा, सम्यक्चारित प्रगटाया।।
हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चिदानन्द का चंदन ले, तुमने भव ताप नशाया है।
हे नाथ! आपने निजस्वरूप, संयम शक्ती से पाया है।।
हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

है सिद्ध सुपद अक्षय अखण्ड निज, अनुभव से तुमने जाना।

दुखदायी हैं इन्द्रादिक पद, शुभ कर्मों का फल यह गाया।।
हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है चिदानन्द मेरा स्वभाव, निज अनुभव से यह जान लिया।
कामादिक भाव विभाव सभी, निज ज्ञान से ये पहिचान लिया।।
हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन पर जीवन कई हमने, रसना के रस में खोए हैं।
पर चेतन रस से दूर रहे, कई बीज कर्म के बोए हैं।।
हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस मोह कर्म ने चक्रवर्ति, आदिक सब को मजबूर किया।
उस मोह कर्म की शक्ती को, हे प्रभु तुमने चकचूर किया।।
हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ आपने प्रगटाई, निज ध्यान के द्वारा तप ज्वाला।
निज आत्मलीनता पाकर के, कर्मों का संवर कर डाला।।

हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु निर्विकार अविचल अनुपम, हे नाथ मोक्ष फल पाने को।
तुम परम समाधी लीन हुए, प्रभु सिद्धशिला पर जाने को।।
हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मद मोह राग का कोलाहल, प्रभु तुम्हें डिगा ना पाया है।
समभाव धारकर पद अनर्घ्य, हे प्रभु तुमने प्रगटाया है।।
हम मोक्ष कल्याणक की पूजा कर, मोक्ष महा पदवी पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर के, प्रभु सिद्ध शिला पर बश जाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

कर्मनाश करके प्रभू, पाए मोक्ष कल्याण।
विनय भाव के साथ हम, करते हैं जयगान।।

(वीर छन्द)

नश्वर देह से ममता तजकर, किए प्रभू जी स्थिर ध्यान।
योग निरोध किए पारसप्रभु, धारी वीतराग विज्ञान।।
स्थिर योग धारकर स्वामी, पाए पृथक्त्व वितर्क शुभ ध्यान।
असंख्यात गुण कर्म निर्जरा, कारी हुए स्वयं भगवान।।1।।

क्षायिक श्रेणी पाके प्रभु ने, पाया अष्टम गुण स्थान।
नवम दशम क्रमशः बारहवे, में पाए एकत्व सुध्यान।।
योगाभाव किए फिर स्वामी, बने अयोगी आप जिनेश।
व्युपरत क्रिया निवृत्ती पाए, पार्श्व प्रभू जी ध्यान विशेष।।2।।
प्रथम समय में आप बहत्तर, कर्म प्रकृतियाँ किए विनाश।
अन्त समय में तेरह नासे, सिद्ध शिला पर कीन्हेवास।।
ज्ञान शरीरी सिद्धशिला पर, आप विराजे आठों याम।
शादि अनन्तकाल को पाया, प्रभु ने शाश्वत निज ध्रुव धाम।।3।
मंगलगान किए सुरपति मिल, गगन में गूँजा जय जयकार।
उड़ा निमिश में तन कपूर वत, मोक्ष सुपद पाए अविकार।।
नख केशों का अग्नि देव सब, करते हैं अग्नी संस्कार।
देव भस्म का तिलक लगाकर, वन्दन करते बारम्बार।।4।।

दोहा- **पाए मोक्ष कल्याण प्रभु, पार्श्वनाथ भगवान।**
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जयमाला गाके यहाँ, किया प्रभू गुणगान।**
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।।

इत्याशीर्वादः। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

महाअर्घ्य

पार्श्व प्रभू निर्द्वन्द निरामय, निस्कलंक निर्दोष महान।
निश्चल नित्यानन्द निरायुध, निस्किंचत हो आप प्रधान।।
माँ वामा के लाल आप हैं, अश्वसेन के कुल भूषण।
बाल ब्रह्मचारी व्रतधारी, विद्या निधि हे निर्दूषण।।
विघ्न विनाशक हे विश्वेश्वर, विश्व विभू हे विषयातीत।
धर्म ध्यान धारी प्रणतेश्वर, विश्वशीर्ष प्रभु उपमातीत।।

सुगुण विभूति महायोगीश्वर, मंगलमय हे दया निधान।
महावृहस्पति मुक्तीवल्लभ, जगदीश्वर प्रभु सिद्ध महान।।
शरण आपकी पाने आया, करने वाले जग कल्याण।
विशद भावना भाते हैं हम, प्रगटाएँ हम भेद विज्ञान।।
पुण्य पाप संताप विनाशक, मोह पूर्ण हो जाए शमन।
नाथ! आपके चरण कमल में, करते हम शत-शत वन्दन।।

ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्षकल्याणविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जाप्य

(1) ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-मोक्ष पंचकल्याणक पदालंकृत श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः। (2) ॐ ह्रीं पंचकल्याणक पदालंकृत श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- **पार्श्वनाथ भगवान शुभ, पाए पञ्चकल्याण।**
जयमाला गाते यहाँ, जिनकी महति महान।।

(शम्भू छन्द)

रत्नत्रय को धारण कर के, निज आतम को जो ध्याये।
उपसर्गों पर विजय प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग को अपनाए।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर वामा, माँ के गर्भ में प्रभु आए।
माँ ने सोलह सपने देखे, पिता स्वप्न फल बतलाए।।1।।
दोज वदी वैशाख बनारस, अश्वसेन गृह प्रगटाए।
पौष वदी ग्यारस को जन्मे, घर-घर में मंगल छाए।।
ऐरावत ले इन्द्र स्वर्ग से, न्हवन कराने को आए।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराकर, जय जय जय मंगल गाए।।2।।
गये शैर करने को स्वामी, एकबार जंगल की ओर।
पार्श्व कुँवर ने देखा तपसी, पञ्चाग्नी तप तपता घोर।।

नाग युगल अग्नी में जलते, देख प्रभू जी हुए उदास।
मंत्र सुनाए णमोकार तब, देव सुगति में पाए वास।।3।।
पौष वदी ग्यारस को पावन, दीक्षा धारे पार्श्वकुमार।
केश लुंचकर हुए दिगम्बर, बने पार्श्व प्रभू जी अनगार।।
किया घोर उपसर्ग कमठ ने, हुए प्रभू जी ध्यानालीन।
हार मान कर चरणों में वह, झुका चरण में होके दीन।।4।।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रकट किए तव केवलज्ञान।
चैत कृष्ण की चौथ को पावन, समवशरण तव रचा महान।।
गिरिसम्मेद शिखर पे जाके, योग निरोध किए भगवान।
श्रावण शुक्ल सप्तमी को, प्रभु पद पाए पावन निर्वाण।।5।।

दोहा- **गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-शुभ, पाए मोक्ष कल्याण।**
स्वर्ण भद्र शुभ कूट से, शिवपुर किए प्रयाण।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणकविभूषित श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पार्श्वनाथ भगवान यह, पाए पञ्च कल्याण।**
जिनकी महिमा का विशद, करते हैं गुणगान।।

इत्याशीर्वादः। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत् शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते टोंक जिलान्तर्गते चाँदसेन पञ्च कल्याणक अवसरे सम्वत् 2542 वि.सं. 2073 वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीया सोमवासरे श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

पार्श्वनाथ चालीसा

(दोहा)

हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।।
इस असार संसार से, पाएँ अब विश्राम।
पार्श्वनाथ जिनराज हे, पद में करें प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पंचाग्नी तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यू को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।14।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लागाए।।15।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिच्छत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।
धरणेन्द्र पद्मावति आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।20।।

पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई।।22।।
चैत कृष्णको चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।।23।।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।26।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण-भद्र शुभ कूट बताए।।28।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।30।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।।31।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।32।।
पुत्र हीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।34।।
पार्श्व प्रभू के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।35।।
बड़ागाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिर मानो।।36।।
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी अहिच्छत्र बतलाया।।37।।
सिरपुर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई।।38।।
तीर्थ अणिंदा भी कहलाए, भरत सिन्धु जहँ स्वर्ग सिधाए।
विशदतीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।

(दोहा)

पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
विशद ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

पार्श्वनाथ भगवान आरती

तर्ज - आज करे हम ....

आज करे हम पार्श्व प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
मणिमय दीपक लेकर आये-2, जिनवर तुमरे द्वार।।
हो जिनवर- हम सब उतारें तेरी आरती, हो प्रभुवर हम सब ..।टेक।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए-2।
अश्वसेन वामा देवी माँ-2, को प्रभु धन्य बनाए।।
हो जिनवर-हम सब .....।।1।।
गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए-2।
छह नौ माह रत्न वृष्टीकर -2, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब .....।।2।।
जन्मोत्सव पर मेरु गिरि पर, आके न्हवन कराए-2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई-2, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर - हम सब .....।।3।।
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए-2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ-2, आके धनद बनाए।।
हो जिनवर- हम सब .....।।4।।
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए-2।
'विशद' आपकी भक्ती करने, चरण शरण हम आए।।
हो जिनवर - हम सब .....।।5।।
आज करें हम पार्श्व प्रभु की, आरती मंगलकारी-2।
मणिमय दीपक लेकर आये-2, जिनवर तुमरे द्वार।।
हो जिनवर- हम सब ..... ।।टेक।।

आचार्य विशद सागर जी महाराज की आरती

(तर्ज : माई री मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा....।)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के .....

ग्राम कूपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के.....